P.G.
SEM - II
Paper - 9

डॉ० कुमारी चम्पा
हिन्दी विभाग
महाराजा कॉलेज

बाणभट्ट की आत्मकथा

व्याख्यात्मक गद्यांश

"क्या छोटा सत्य बड़े सत्य का विरोधी नहीं होता? ऐसा ही तो देख रहा हूँ। सामान्य मनुष्य जिस कार्य के लिए लांछित होता है। उसी कार्य के लिए बड़े लोग सम्मानित होते हैं।"

व्याख्येय गद्यांश हिन्दी के प्रसिद्ध उपन्यास 'बाणभट्ट की आत्मकथा' से ली गयी है। इसके उपन्यासकार आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी हैं। इसके माध्यम से सामाजिक सत्य को दर्शाया गया है। निपुणिका बड़े सशक्त शब्दों में बाणभट्ट के इस प्रस्ताव का विरोध करती है कि कुमार कृष्णवर्द्धन के अनुरोध को मानकर भट्टिनी थानेश्वर के राजगृह का आतिथ्य स्वीकार कर लें उसका कथन है कि भट्टिनी वहाँ तभी जा सकती है जब उसे एक स्वतंत्र देश की रानी के हैसियत से रहने दिया जाय। साथ ही उसका कहना है कि निपुणिका को भी महाराज कोई सजा नहीं देंगे क्योंकि सत्य छोटा हो या बड़ा सत्य सत्य ही होता है निपुणिका को जिस अपराध के लिए दोषी समझा गया है भट्टिनी के प्रति वही अपराध तो महाराज ने भी किया है। निपुणिका के तर्क से बाण हतप्रभ रह गया और सोचने को मजबूर हो गया।

निपुणिका ने जान बूझकर कोई गलत कार्य नहीं किया, किन्तु फिर भी उसे अपराधी समझा गया है किन्तु राजा, सामन्त खुले आम व्यभिचार करते हैं। निरापराधों को मार डालते हैं किन्तु उन्हें कोई अपराधी नहीं कहता, बल्कि समाज उनका आदर सम्मान करता है। क्या दोनों परिस्थितियों के सत्य में अन्तर होता है? निपुणिका चूँकि एक सामान्य नारी है इसलिए क्या उसका सत्य छोटा हो गया है और

Date

राजा सामन्त बड़े होने के कारण क्या उनका सत्य भी बड़ा हो जाता है? तो छोटे सत्य से बड़े सत्य का यह विरोध क्यों? आज के समाज में यही सब तो हो रहा है। निपुणिका को पतिहीन बनाकर भाग्य नेभीमारा और समाज भी उसका तिरस्कार करता है। इतना ही नहीं। राजमहलों में वासना की शिकार बनने हेतु बन्दी बनायी गयी। भट्टिनी को निपुणिका ने क्यों मुक्त कराया? इसके लिए उसे फाँसी की सजा भी हो गयी परन्तु छोटे राजकुल से कोई यह नहीं पूछता कि उसने भट्टिनी जैसी न जाने कितनी ही अबलाओं के सतीत्व पर क्यों डाका डाला। बड़े लोगों के लिए व्यभिचार एक शौक है और उनसे कोई कुछ नहीं कहता और निपुणिका जैसी भाग्यहीना को एक पुण्य कार्य के लिए एक फाँसी की आज्ञा होने पर समाज उसे चुपचाप स्वीकार कर लेता है। यह कैसी विडम्बना है बाण के सामने यह सब हो रहा है। इसलिए बाण यह सोचने के लिए बाध्य हो जाता है कि छोटा सत्य क्या बड़े सत्य का विरोधी हो जाता है? और वह यह निष्कर्ष निकालता है कि हमारे समाज में में दो प्रकार की नीतियाँ चली आ रही हैं समान्य वर्ग के लोग जिस कार्य के लिए अपमानित और दण्डित होते हैं उसी कार्य को करने पर उच्च वर्ग के लोग प्रशंसा के पात्र बनते हैं और सम्मानित किए जाते हैं। सत्य को दो वर्गों मे केवल अपनी सुविधा के अनुसार बाँट दिया गया है।

बाण के शब्दों में लेखक ने आज के सामाजिक व्यवस्था के कुरीतियों पर कठोर व्यंग्य किया है। एवं सार्वजनिक तथ्य को प्रस्तुत भी किया है। वर्गों मे बटे हमारे अविभाज्य समाज को सुविधानुसार बाँट दिया गया है।